विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 2 सितम्बर 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

6. कारक तथा उपपद विभक्ति

स्मरणीयम्

1. विभक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं – कारक विभक्ति तथा उपपद विभक्ति।
2. क्रिया को आधार मानकर जो विभक्ति लगती है, उसे कारक विभक्ति कहते हैं; जैसे बालिकाः कलमेन लिखति। यहाँ 'कलमेन' क्योंकि लिखने का सिधन है अतः करण कारक है इसलिए कर्म शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है तथा बालक कर्ता कारक है, अतः इसमें प्रथमा विभक्ति है।
3. किसी विशेष पद या शब्द के योग में प्रयोग होने वाली विभक्ति उपपद विभक्ति कहलाती है; जैसे – छात्राः अध्यापकेन सह गच्छन्ति। यहाँ सह के योग में अध्यापक शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
4. संस्कृत में छह कारक हैं – कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, उपादान तथा अधिकरण।
5. सम्बन्ध को संस्कृत में कारक नहीं माना जाता है क्योंकि इसमें संज्ञा आदि शब्दों का अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है।
6. स्मबोधन के रूप प्रथमा विभक्ति के समान चलते हैं अतः भी कारक नहीं है।
7. प्रति के योग में द्वितीय विभक्ति का प्रयोग होता है।
8. सह तथा अलम् के योग में तृतीया, नमः, क्रोछ् अलम् (पर्याप्त) के योग में चतुर्थी विभक्ति, एवं बहिः के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।
9. 'विना' के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी किसी भी विभक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।
10. किसी वाक्य में कारक विभक्ति तथा उपपद विभक्ति दोनों प्राप्त होने पर उपपद विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।